कक्षा में जिज्ञासा को पोषित करना | कुछ अनुभव, कुछ सीख

अनघ पुरन्दरे

हमारे आस-पास की दुनिया के बारे में हमारी जिज्ञासा अकसर उसके बारे में जानने-समझने के लिए हमारी तीव्र प्रेरणा बनती है। सवाल पूछने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना और उनके सवालों के जवाब तलाशने में मदद करना विद्यार्थियों की सहज जिज्ञासा बनाए रख सकता है और स्कूल में उनके सीखने को प्रेरित कर सकता है। इस लेख में, मैं बच्चों को सवाल पूछने के लिए प्रेरित करने के अपने कुछ अनुभव और इस अभ्यास से मैंने जो सीखा उसे साझा कर रहा हूँ।

मैंने इस चुनौती का सामना अपने शिक्षण के शुरुआती दिनों में किया था। जब आँखों में सपने लिए, बड़े उत्साह के साथ अनुभवहीन विज्ञान शिक्षक के रूप में मैंने एक छोटे वैकल्पिक स्कूल में पढ़ाना शुरू किया था। जोश से भरे विद्यार्थियों ने मुझ पर सवालों की बौछार कर दी थी। एक नए शिक्षक के लिए यह देखना बहुत ही अद्भुत था कि विद्यार्थियों के अपने रोज़मर्रा के अनुभव इन सवालों को प्रेरित कर रहे थे। बारिश वाले एक दिन, कक्षा-3 का एक विद्यार्थी दौड़ते हुए मेरे पास आया। वह अपने कोमल हाथों में एक फिसलू मेंढक को पकड़े रखने की कोशिश कर रहा था। उसने मुझसे पूछा, "मेंढक की सू-सू (पेशाब) छूने पर मेरी सू-सू की तरह गर्म क्यों नहीं लगती?" इससे पहले कि मैं इस सवाल के उपजने की सम्भावित जड़ के बारे में सोच पाता उसने ही मुझे बताया कि उसे कैसे पता चला कि उसकी सू-सू गर्म होती है! तब मुझे यह स्पष्ट हो गया कि यह और इस तरह के कई और सवाल, ख़ासतौर से छोटे बच्चों के सवाल, उनके अनुभवों और अवलोकनों से जुड़े हुए होते हैं। जो बात मुझे स्पष्ट नहीं थी, वह यह थी कि इस तरह के सवालों के जवाब मैं कैसे दूँ।

एक कार्यनीति के रूप में जवाबी-सवाल पूछना

शुरुआत में मैंने सोचा कि अगर मैं बच्चों के सवालों के जवाब दे दूँ तो वे सीखने के अवसर से वंचित रह जाएँगे। इसके अलावा, मुझे लगा कि बच्चे अपने सारे सवालों के जवाब पाने के लिए मुझ पर निर्भर हो जाएँगे। यह उनके लिए उस वक़्त मेरे दिमाग़ में जो योजना थी उसके विपरीत स्थिति थी। मेरी योजना थी स्वतंत्र प्रश्नकर्ता बन पाने में बच्चों की मदद करना। मैंने मेरे पास आने वाले हर एक सवाल से निपटने के लिए जवाबी-सवाल पूछने की कार्यनीति (counter-questioning strategy) अपनाने का निर्णय लिया। तो, मैं उनके सवालों के जवाब में उनसे इस तरह के सवाल करता जिनके जवाब उनके मूल सवाल के जवाब की ओर संकेत करते। मैं बच्चों की उम्र और स्तर को ध्यान में रखते हुए इन जवाबी सवालों को गढ़ता था। इसका मतलब यह भी था कि मुझे उनके सवाल को समझना, जवाब तैयार करना और फिर जवाबी-सवाल बनाना था। इस कार्यनीति के साथ ख़ुद को ढालने में कुछ समय लगा।

लेकिन मैंने पाया कि इस कार्यनीति से जिज्ञासु खोजी बनने की बजाय विद्यार्थियों ने मुझसे सवाल पूछने ही कम कर दिए। इसके साथ ही उनकी यह शिकायत थी कि मैं उनके सवालों का कभी जवाब ही नहीं देता। जो इस बात को स्पष्ट रूप से दर्शा रही थी कि मेरी जवाबी-सवाल पूछने की कार्यनीति विफल हो गई थी।

वैसे जवाबी-सवाल की यह कार्यनीति पूरी तरह से विफल नहीं हुई थी, क्योंकि कक्षा-5 और 6 के विद्यार्थियों के साथ यह कारगर रही थी। इस समय बच्चे अपनी मातृभाषा मराठी (माध्यम) से अँग्रेज़ी (माध्यम) में आने के बदलाव से गुज़र रहे थे। वे कई नए अँग्रेज़ी शब्दों का सामना कर रहे थे जिनका अर्थ उन्हें नहीं पता था। कक्षा के दौरान अकसर वे मुझसे कई ऐसे शब्दों का मतलब पूछते थे जिनसे वे अनजान थे। मैं अपनी जवाबी-सवाल करने की कार्यनीति को थोड़ा-सा बदलकर पहेली बूझो कार्यनीति बना देता था। मैं सीधे-सीधे किसी नए शब्द का अर्थ बताने की बजाय ऐसे वाक्य बनाता था जिनमें वह नया शब्द शामिल हो और उसके अलावा बाक़ी सभी शब्द ऐसे हों जिन्हें बच्चे पहले से जानते हों। फिर उनके लिए उस शब्द का अर्थ पता लगाना आसान हो जाता था। बच्चों को इन पहेलियों को हल करने और इस तरह मज़ेदार अन्दाज़ में सीखने में बहुत मज़ा आता था।

प्रश्न-पेटी

अपने पिछले अनुभव पर ग़ौर करते हुए मुझे एहसास हुआ कि सभी सवालों के लिए मैं समान रवैया अपना रहा था। एक छोटे वैकल्पिक स्कूल के लिए यह कोई बड़ी समस्या नहीं थी। हम आसानी से समझ में न आने वाले उत्तर को समझने में

बहुत समय ख़र्च कर सकते थे। पर मुझे एहसास हुआ कि यदि विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती है तो इस तरीक़े में बहुत अधिक समय और ऊर्जा की ज़रूरत होगी। न सिर्फ़ विद्यार्थियों की संख्या बल्कि स्कूल के पाठ्यक्रम की अन्य ज़रूरतों के कारण भी इस तरीक़े के साथ आगे बढ़ने में मुश्किल होगी।

जब मैं एक छोटे, वैकल्पिक स्कूल से एक बड़े और अधिक औपचारिक परिवेश वाले स्कूल में गया तो मैंने एक अलग कार्यनीति अपनाने का निर्णय लिया। इस समय तक मुझे शिक्षण का थोड़ा और अनुभव प्राप्त हो चुका था। मैंने पढ़ना और अपने साथी शिक्षकों के साथ कक्षा के अनुभवों पर चर्चा करना शुरू कर दिया था। 'प्रश्न-पेटी' का सुझाव भी मुझे मेरे एक सहकर्मी ने ही दिया था।

जैसा कि हमने मेंढक की सू-सू वाले सवाल के मामले में देखा था, विद्यार्थियों के सवाल कहीं से, कुछ भी हो सकते हैं। कई बार ये कक्षा के सामान्य कामकाज में भी व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं। पर साथ ही मैं नहीं चाहता था कि विद्यार्थी सवाल पूछने के प्रति हतोत्साहित हों। प्रश्न-पेटी वाली तरक़ीब इसका एक हल थी। शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत में मैंने हर सेक्शन के कुछ विद्यार्थियों से पुराने जूते का डिब्बा लाने के लिए कहा। हमने इसे सजाया और कक्षा में उसे प्रश्न-पेटी बनाकर रख दिया। विद्यार्थियों को सवाल लिखने के लिए मैंने एक तरफ़ से उपयोग किए जा चुके काग़ज़ की पर्चियों को पेटी में लगा दिया। जब भी किसी के मन में कोई ऐसा सवाल उठता जो सीधे तौर पर कक्षा के कामकाज से सम्बन्धित न हो, तो वह उसे काग़ज़ की पर्ची पर अपने नाम के साथ लिखकर प्रश्न-पेटी में डाल देता था। बच्चों को पूरे दिन में कभी भी अपने सवालों को प्रश्न-पेटी में डालने के लिए प्रोत्साहित किया गया। जब कभी मेरा पूर्व नियोजित पाठ पूरा हो जाता और मेरे पास अतिरिक्त वक़्त होता, तब मैं उस प्रश्न-पेटी को खोलता और उसमें से कुछेक सवालों को लेता। पूरी कक्षा मिलकर सम्भावित जवाबों पर चर्चा करती और उनके जवाब पाने के लिए आगे की खोजबीन करने की योजना बनाती। कभी-कभी हमें जवाब का पता लगाने के लिए आगे बढ़ने से पहले सवाल पूछने वाले विद्यार्थी से पूछे गए सवाल को स्पष्टता से समझना पड़ता।

प्रश्न-पेटी के उपयोग से सवाल उपजने, सवाल पूछने में विद्यार्थियों की दिलचस्पी बनाए रखने और सबसे महत्त्वपूर्ण, सवालों के जवाब तलाशने की प्रक्रिया में साफ़तौर पर फ़ायदा हुआ। इसके अलावा, प्रश्न-पेटी खोलना एक ऐसी गतिविधि बन गई जिसका सभी बेसब्री से इन्तज़ार करते थे। इससे कक्षा को समय पर निर्धारित कार्य पूरा करने के लिए प्रोत्साहन मिला, ताकि प्रश्न-पेटी खोलने के लिए समय मिल सके। प्रश्नों के साथ उनके नाम जोड़ने से उनमें स्वामित्व और ज़िम्मेदारी की भावना विकसित हुई, जिससे खोज में उनकी दिलचस्पी लगातार बनी रही।

मेरी सीखें

इन अनुभवों के द्वारा, एक शिक्षक के तौर पर मेरी कुछ महत्त्वपूर्ण सीखों को रेखांकित करना चाहता हूँ :

- जितने विविध अनुभव मैं विद्यार्थियों को अपने शिक्षण-सम्बन्धी तरीक़ों के चयन द्वारा दे सका उससे उन्हें अवलोकन करने और विविध सवालों को पूछने के लिए उतने ही अधिक अवसर मिले।
- विद्यार्थियों के सवालों को सम्हालने के मेरे तरीक़ों का चयन विद्यार्थियों की उम्र, उनकी मौजूदा जानकारी/ ज्ञान, पाठ्यक्रम की सीमाओं और आवश्यकताओं व विद्यार्थियों द्वारा माँगी गई जानकारी की प्रकृति पर निर्भर करता था।
- मैंने सन्दर्भ के आधार पर सही जानकारी खोजने के लिए सुरक्षित जगह देने और उनके सवालों पर स्वामित्व का भाव पैदा करने के बीच सन्तुलन बनाने को प्राथमिकता दी।

इनके अलावा, कुछ ऐसे अन्य बिन्दु भी हैं जिनसे, मेरे ख़्याल से, मुझे अपने विद्यार्थियों की जिज्ञासा को पोषित करने के तरीक़े खोजने की अपनी कोशिश में मदद मिली। इनमें सबसे प्रमुख है सबके सामने अपने ज्ञान की सीमा को स्वीकारना। मैं यह कहने को प्राथमिकता देता हूँ, "मुझे नहीं पता, पर चलो पता करते हैं/ करता हूँ।" इससे मुझे न सिर्फ़ विश्वसनीय जवाब तलाशने का या स्थिति के अनुरूप उचित प्रतिक्रिया तैयार करने के लिए समय मिल जाता था, बल्कि ऐसा कहना विद्यार्थियों को यह भी जताता था कि यदि किसी चीज़ के बारे में उन्हें नहीं पता है तो वे भी उसकी खोज कर सकते हैं। दूसरी बात, मुझे लगता है कि विद्यार्थियों को सवाल पूछने के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करना उन्हें अधिक सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहित करने में समान रूप से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस सुरक्षित स्थान में यह भी शामिल है कि हम उनकी और अपनी ग़लतियों को किस तरह से देखते हैं। अन्त में, हमें यह याद रखना चाहिए कि सवालों से भरी कक्षा इसमें शामिल सभी लोगों के लिए संयुक्त रूप से एक रोचक और नया अनुभव होती है।

अनघ पुरन्दरे अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बेंगलूरु में शिक्षक हैं। विज्ञान और जीवविज्ञान के शिक्षक होने के नाते उनकी रुचि इस बात में है कि बच्चे विज्ञान और अन्य रोचक तथ्यों व घटनाओं को किस तरह सीखते-समझते हैं। उनसे anagh.purandare@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : प्रियेश गुप्ता **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय